

प्रेषक,

डा०रणबीर सिंह,
प्रमुख सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

मेलाधिकारी,
हरिद्वार।

शहरी विकास अनुभाग-1

देहरादून : दिनांक : 12 मई 2011

विषय: कुम्भ मेला, 2010 की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत नगर पालिका, हरिद्वार के क्षेत्रान्तर्गत क्षतिग्रस्त सड़कों के सी.सी. द्वारा निर्माण हेतु प्रशासकीय, वित्तीय तथा व्यय की स्वीकृति के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक शासनादेश संख्या-1278/IV(1)/2009-22(कुम्भ)/2009 दिनांक 17.11.2009 का संदर्भ ग्रहण करें, जिसके द्वारा अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद, हरिद्वार द्वारा उक्त कार्य हेतु प्रस्तुत आगणन रु. 230.23 लाख के तकनीकी परीक्षणोपरान्त संस्तुत रु. 219.88 लाख (रु० दो करोड़ उन्नीस लाख अठठासी हजार) मात्र की धनराशि की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति देते हुए प्रथम किश्त के रूप में रु० 100.00 लाख (रुपये एक करोड़) मात्र की धनराशि को व्यय किए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है। तत्क्रम में आपके पत्र संख्या-1081/मु०स्था०नि०सहा०/2010-11 दिनांक 21.9.2010 की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करते हुए मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल, उक्त कार्य हेतु संस्तुत धनराशि के सापेक्ष न्यूनतम निविदा आधार पर अवशेष धनराशि रु. 112.58 लाख (रु. एक करोड़ बारह लाख अठावन हजार) मात्र को कोषागार से आहरित कर ४०६००० के पी०एल०ए० में रखी गयी धनराशि से वित्तीय वर्ष 2010-11 में व्यय किए जाने की निम्नलिखित शर्तों एवं प्रतिबन्धों के साथ सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं :-

1. स्वीकृत की जा रही धनराशि का आवश्यकतानुसार किश्तों में आहरण किया जाएगा और पूर्व आहरित धनराशि के पूर्ण उपयोग के बाद ही अगली किश्त का कोषागार से आहरण किया जाएगा। यदि पूर्व अवमुक्त धनराशि बैंक में रखकर उस पर ब्याज अर्जित हुआ है तो उस समस्त अर्जित ब्याज को राजकोष में ट्रेजरी चालान से जमा करके उसकी फोटोप्रति शासन को अविलम्ब उपलब्ध करवाने का दायित्व मेलाधिकारी का ही होगा।
2. चूंकि निविदा में प्राप्त एल-1 निविदा (न्यूनतम निविदा) आधार पर स्वीकृत लागत से कम धनराशि व्यय होना सम्भावित है। अतः न्यूनतम सम्भावित व्यय के अनुसार ही धनराशि आहरण की जाएगी तथा आहरित धनराशि के सापेक्ष कोई धनराशि बचत होती है तो उसे तत्काल राजकोष में जमा किया जाएगा।
3. उक्त धनराशि के पूर्ण उपयोग कर नियमानुसार उपयोगिता प्रमाणपत्र उपलब्ध कराए जाने के उपरान्त ही शेष धनराशि अवमुक्त किए जाने पर विचार किया जाएगा।
4. अन्तिम किश्त का न्यूनतम निविदा (एल-1) का विवरण देकर उसी के अनुसार ही स्वीकृति हेतु अवशेष धनराशि का ही कोषागार से आहरण किया जाएगा।
5. उक्त कार्य इसी धनराशि से पूर्ण किया जाएगा और आगणन का पुनरीक्षण किसी भी दशा में अनुमन्य न होगा।
6. योजनान्तर्गत प्रस्तावित कार्यों का निकटता से पर्यवेक्षण किया जाए। इसके लिए यथाआवश्यकता, निगरानी समिति का गठन कर लिया जाए।

7. कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शासनादेश संख्या 475/XXVII(7)/2008 दिनांक 15 दिसम्बर, 2008 की व्यवस्थानुसार निर्धारित प्रारूप पर अनुबन्ध निष्पादन की कार्यवाही सुनिश्चित कर ली जाएगी।
8. कार्य की गुणवत्ता एवं समयबद्धता के लिए संबंधित अधिशासी अभियंता/मेलाधिकारी पूर्ण रूप से उत्तरदायी होंगे।
9. शेष शर्तें एवं प्रतिबन्ध उक्त शासनादेश दिनांक 17.11.2009 के अनुसार यथावत लागू रहेंगे।

2- इस सम्बन्ध में होने वाला व्यय शासनादेश संख्या-436/IV(1)/2010-39(साम0)2006- टी0सी0 दिनांक 25.03.2010 के द्वारा मेलाधिकारी, हरिद्वार के निवर्तन पर रखी गयी धनराशि रु0 108.5590 करोड़ के सापेक्ष किया जायेगा एवं पुस्तांकन तदुत्थान में वर्णित लेखाशीर्षक में किया जायेगा।

3- यह आदेश वित्त विभाग के अशा.सं.-39/XXVII(2)/20.11 दिनांक 28 अप्रैल, 2011 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय,

(डा0रणबीर सिंह)
प्रमुख सचिव।

संख्या : 119 (1)/IV(1)/2011 तददिनांक।

प्रतिलिपि : निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. निजी सचिव, मा. मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड।
2. निजी सचिव, मा. शहरी विकास मंत्री जी, उत्तराखण्ड।
3. महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी प्रथम), उत्तराखण्ड, देहरादून।
4. महालेखाकार (ऑडिट), उत्तराखण्ड, देहरादून।
5. स्टाफ आफिसर, मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
6. आयुक्त, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी।
7. जिलाधिकारी, हरिद्वार।
8. वरिष्ठ कोषाधिकारी, हरिद्वार।
9. वित्त अनुभाग-2/वित्त नियोजन प्रकोष्ठ, बजट अनुभाग, उत्तराखण्ड शासन।
10. निदेशक, एन.आई.सी., सचिवालय परिसर, देहरादून, को इस अनुरोध के साथ कि नगर विकास के जी.ओ. में इसे शामिल करें।
11. अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद, हरिद्वार।
12. गार्ड बुक।

आज्ञा से,

(सुभाष चन्द्र)
उप सचिव।